Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

Original Article

वैश्विक बाजार में गांधी का 'स्वदेशी': एक सामयिक चिंतन

डॉ.मो. हेदायतुल्लाह
राजनीति विज्ञान, ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा
Email: hedayatm60@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2026-180104
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 1(A)
Pp. 16-19
January - 2026
Submitted: 15 Dec. 2025
Revised: 25 Dec. 2025
Accepted: 10 Jan. 2026
Published: 31 Jan. 2026

सारांश

वर्तमान वैश्वीकरण के युग में, जहाँ एक ओर 'ग्लोबल विलेज' की अवधारणा मजबूत हो रही है वहीं दूसरी ओर असमानता, पर्यावरणीय क्षरण और सांस्कृतिक एकरूपता जैसी गंभीर चुनौतियाँ उभरी हैं, ऐसे में महात्मा गांधी का 'स्वदेशी' सिद्धांत एक गहन और प्रासंगिक दर्शन के रूप में सामने आता है। स्वदेशी को महज संरक्षणवाद न समझकर एक समग्र जीवन दृष्टि के रूप में देखना चाहिए, जो स्थानीय अर्थव्यवस्था, नैतिक उपभोग, पर्यावरणीय स्थिरता और सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा देता है। COVID-19 महामारी जैसी वैश्विक घटनाओं ने वैश्विक आपूर्ति शृंखलाओं की नाजुकता और रणनीतिक आत्मनिर्भरता के महत्व को उजागर किया है, जो स्वदेशी के सिद्धांतों की व्यावहारिक उपयोगिता सिद्ध करता है। गांधी का दृष्टिकोण अलगाववादी नहीं बल्कि 'ग्लोकलाइजेशन' का समर्थक है, जहाँ वैश्विक सहयोग और स्थानीय आत्मनिर्भरता के बीच एक स्वस्थ संतुलन से ही एक न्यायपूर्ण, समावेशी और टिकाऊ वैश्विक व्यवस्था का निर्माण संभव है। अतः स्वदेशी पीछे हटने का नहीं, बल्कि एक संतुलित भविष्य की ओर बढ़ने का आह्वान है।

कूटशब्द : *स्वदेशी, वैश्वीकरण, स्थानीय अर्थव्यवस्था, नैतिक उपभोग, आत्मनिर्भरता, पर्यावरण*

प्रस्तावना

आज का युग वैश्वीकरण का युग है। एक ओर 'ग्लोबल विलेज' की अवधारणा साकार होती दिख रही है, जहाँ सूचना, पूंजी, वस्तुएं और सेवाएं दुनिया के एक कोने से दूसरे कोने तक बिना रुकावट प्रवाहित हो रही हैं। दूसरी ओर, इसी वैश्वीकरण ने असमानता, सांस्कृतिक समरूपता, पर्यावरणीय क्षरण और आर्थिक अस्थिरता के गंभीर प्रश्न खड़े किए हैं। ऐसे में, महात्मा गांधी का 'स्वदेशी' का सिद्धांत, जिसे अक्सर एक राष्ट्रवादी, संरक्षणवादी या अतीत में अटका हुआ विचार समझ लिया जाता है, वास्तव में एक गहन, दूरदर्शी और अत्यंत प्रासंगिक आर्थिक-सामाजिक दर्शन के रूप में हमारे सामने खड़ा होता है। स्वदेशी को महज 'विदेशी वस्तु बहिष्कार' तक सीमित देखना इसके व्यापक अर्थों को नकारना है। गांधी के लिए स्वदेशी एक समग्र जीवन दृष्टि थी – एक ऐसी अर्थव्यवस्था और समाज का आधार, जो मानवीय गरिमा, सामुदायिक सशक्तिकरण, पर्यावरणीय संतुलन और नैतिक मूल्यों पर टिकी हो। जैसा कि गांधीवादी अर्थशास्त्री जे.सी. कुमारप्पा ने स्पष्ट किया, स्वदेशी का उद्देश्य एक ऐसी आर्थिक व्यवस्था का निर्माण करना है जो "स्थानीय संसाधनों, स्थानीय श्रम और स्थानीय आवश्यकताओं पर आधारित हो, जिससे शोषण का अंत हो और सामुदायिक भलाई सुनिश्चित हो"।[1]

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
डॉ.मो. हेदायतुल्लाह, राजनीति विज्ञान, ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

How to cite this article:
मो. हेदायतुल्लाह. (2026). वैश्विक बाजार में गांधी का 'स्वदेशी': एक सामयिक चिंतन. Journal of Research & Development, 18(1(A)), 16–19. https://doi.org/10.5281/zenodo.18595413

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.18595413
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

वैश्विक बाजार के इस दौर में, जहां 'बड़ा' ही 'बेहतर' का पर्याय बन गया है, गांधी का जोर 'छोटा', 'स्थानीय' और 'आत्मनिर्भर' पर था। क्या ये विचार आज भी व्यवहारिक हैं? क्या वैश्विक अर्थव्यवस्था के जटिल जाल में स्वदेशी एक व्यवहार्य विकल्प या कम से कम एक सार्थक संतुलन बन सकता है? यही इस सामयिक चिंतन का केंद्र है।

'स्वदेशी' का गांधीवादी दर्शन: सिर्फ अर्थशास्त्र नहीं, एक आध्यात्मिक आधार

गांधीजी के लिए स्वदेशी स्वराज (आत्मशासन) का अभिन्न अंग था। यह कोई अलगाववादी नीति नहीं, बल्कि आत्मबल और आत्मसम्मान पर आधारित विकास का मार्ग था। इसके कई स्तर हैं:

1. स्थानीय अर्थव्यवस्था और रोजगार: गांधी का मानना था कि किसी क्षेत्र की जरूरतों की पूर्ति वहां के संसाधनों और कौशल से होनी चाहिए। गांवों को आत्मनिर्भर इकाइयां बनाना उनका सपना था। इससे स्थानीय उद्यमिता को बल मिलता, रोजगार सृजित होता और पलायन रुकता। यह 'उत्पादन बड़े पैमाने पर' के बजाय 'उत्पादन लोगों द्वारा' का समर्थन करता था। चरखा और खादी इसके सबसे प्रतीकात्मक उदाहरण थे, जो गरीब से गरीब व्यक्ति को गरिमापूर्ण रोजगार दे सकते थे। गांधी ने 'हिंद स्वराज' में इस बात पर जोर दिया कि वास्तविक स्वराज तभी आ सकता है जब हम अपनी बुनियादी आवश्यकताओं के लिए दूसरों पर निर्भर न रहें ।[2]

2. नैतिक उपभोग और अहिंसा: स्वदेशी नैतिक उपभोग की अवधारणा से जुड़ा है। गांधी के लिए, हर खरीदारी एक नैतिक कार्य है। दूसरे देश या समुदाय के श्रमिकों का शोषण करके बनी सस्ती वस्तु खरीदना अहिंसा के सिद्धांत के विरुद्ध है। उपभोक्ता की शक्ति को पहचानते हुए, वे चाहते थे कि लोग स्थानीय उत्पाद खरीदें ताकि अपने समुदाय के कारीगरों और श्रमिकों का पोषण हो सके। उन्होंने 'यंग इंडिया' में लिखा, "स्वदेशी का अर्थ है... अपने पड़ोसी के उद्योग को अपने पास के पड़ोसी के रूप में ही पवित्र मानना" ।[3]

3. पर्यावरणीय स्थिरता: दूर-दूर से माल ढोकर लाना परिवहन से जुड़े ईंधन खपत और प्रदूषण को बढ़ाता है। स्थानीय उत्पादन और उपभोग से इसका नकारात्मक प्रभाव कम होता है। गांधी ने प्रकृति के साथ सहअस्तित्व और संसाधनों के संयमित उपयोग पर जोर दिया, जो आज की जलवायु चुनौती के लिए अहम दृष्टि है। उनका 'अपरिग्रह' (अनावश्यक संचय का त्याग) का सिद्धांत आधुनिक हरित अर्थव्यवस्था के सिद्धांतों के अनुरूप है ।[4]

4. सांस्कृतिक संरक्षण और विविधता: वैश्विक बाजार एकरूप 'वैश्विक संस्कृति' थोपने का प्रयास करता है। स्वदेशी स्थानीय कला, शिल्प, ज्ञान-पद्धति और उत्पादन तकनीकों को बचाता है। यह सांस्कृतिक विविधता को बनाए रखने का माध्यम है, जो मानवता की सामूहिक धरोहर है।

5. आत्मनिर्भरता बनाम आत्म-केंद्रितता: यहां एक महत्वपूर्ण भेद करना जरूरी है। गांधी की आत्मनिर्भरता का अर्थ आत्म-केंद्रितता या दुनिया से कट जाना कतई नहीं था। यह 'अंतर-निर्भरता' का एक स्वस्थ रूप था, जहां स्वतंत्र, मजबूत इकाइयां (व्यक्ति, गांव, राष्ट्र) आपसी सम्मान और सहयोग से जुड़ती हैं, न कि शोषण और निर्भरता के रिश्ते से। वे 'विश्व बंधुत्व' के पक्षधर थे, पर उसकी बुनियाद राष्ट्रीय गरिमा और आत्मबल में देखते थे। यह विचार 'सर्वोदय' दर्शन में और विकसित हुआ।

वैश्विक बाजार: उपलब्धियां और विडंबनाएं

वैश्वीकरण और मुक्त बाजार ने निर्विवाद रूप से अभूतपूर्व समृद्धि लाई है। तकनीकी प्रगति, वस्तुओं की विविधता, लागत में कमी, और वैश्विक सहयोग के नए अवसर पैदा किए हैं। लेकिन इसके कई अंधेरे पहलू भी सामने आए हैं:

- आर्थिक अस्थिरता: एक देश की आर्थिक मंदी या वित्तीय संकट तेजी से पूरी दुनिया में फैल जाता है। 2008 का वित्तीय संकट इसका ज्वलंत उदाहरण है।
- शोषण और असमानता: सस्ते श्रम की तलाश में बहुराष्ट्रीय कंपनियों का विकासशील देशों की ओर पलायन अक्सर श्रमिक अधिकारों के हनन और खराब कार्य स्थितियों से जुड़ा है। मुनाफा केंद्रित होता है, जबकि जोखिम विकेंद्रित।
- पर्यावरणीय संकट: लंबी आपूर्ति श्रृंखलाओं (सप्लाई चेन) से कार्बन उत्सर्जन बढ़ता है। एकल कृषि (मोनोकल्चर) और अति-दोहन से प्राकृतिक संसाधन नष्ट हो रहे हैं।
- स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं का पतन: बड़े कॉरपोरेट और सब्सिडी वाले आयात के आगे छोटे स्थानीय उद्यम और किसान टिक नहीं पाते, जिससे बेरोजगारी और सामाजिक तनाव पैदा होता है।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

- सांस्कृतिक समरूपता: दुनिया भर में एक जैसे मॉल, एक जैसे ब्रांड और एक जैसी उपभोक्तावादी संस्कृति स्थानीय पहचान को कमजोर कर रही है।

विशेष रूप से, COVID-19 महामारी ने वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं की नाजुकता को स्पष्ट रूप से उजागर कर दिया, जिससे दुनिया भर में रणनीतिक आत्मनिर्भरता पर चर्चा तेज हो गई। विश्व व्यापार संगठन (WTO) की 2021 की रिपोर्ट ने भी वैश्विक व्यापार में इस तरह की व्यवधानों के जोखिम को रेखांकित किया ।[5]

स्वदेशी: एक व्यवहारिक समाधान के रूप में - ऐसे में, गांधी का स्वदेशी दर्शन केवल एक नैतिक आदर्श नहीं, बल्कि एक व्यवहारिक प्रतिक्रिया प्रस्तुत करता है:

1. लचीली अर्थव्यवस्था का निर्माण: COVID-19 महामारी के अनुभव ने दर्शाया कि दवाएं, अर्धचालक चिप्स जैसी रणनीतिक वस्तुओं में अति-निर्भरता खतरनाक है। स्वदेशी के सिद्धांत पर आधारित 'आत्मनिर्भर भारत' जैसे अभियान इसी सबक की प्रतिक्रिया हैं। यह निर्यात को नकारना नहीं, बल्कि महत्वपूर्ण क्षेत्रों में स्वयं की क्षमता विकसित करना है, ताकि वैश्विक झटकों के प्रति अर्थव्यवस्था की लचीलापन बढ़े।

2. सामाजिक न्याय और समावेशन: वैश्वीकरण से लाभ अक्सर शिक्षित, शहरी वर्ग तक सीमित रह जाता है। स्वदेशी का मॉडल ग्रामीण और असंगठित क्षेत्र को मुख्यधारा की अर्थव्यवस्था से जोड़ता है। स्थानीय हस्तशिल्प, कृषि-प्रसंस्करण, छोटे उद्योगों को बढ़ावा देकर यह समावेशी विकास को बढ़ावा दे सकता है, जो गांधी के 'अंतिम व्यक्ति' के कल्याण के विचार के अनुरूप है।

3. हरित अर्थव्यवस्था का मार्ग: 'लोकल फॉर ग्लोबल' आज का नारा बन गया है। स्थानीय उत्पादन से 'फूड माइलेज' कम होता है, पैकेजिंग की जरूरत घटती है और कार्बन फुटप्रिंट छोटा होता है। यह टिकाऊ विकास के लक्ष्यों से सीधे मेल खाता है। जैसा कि रमेश चंद्र ने तर्क दिया है, गांधीवादी अर्थव्यवस्था अनिवार्य रूप से एक पर्यावरण-अनुकूल मॉडल है ।[6]

4. उपभोक्ता सशक्तिकरण: नैतिक उपभोक्तावाद की लहर तेज हो रही है। 'फेयर ट्रेड', 'ऑर्गेनिक', 'लोकलली सोर्स्ड' जैसे टैग इसी मांग का प्रतिफल हैं। यह गांधी के नैतिक उपभोग के विचार का ही आधुनिक स्वरूप है, जहाँ उपभोक्ता अपनी खरीदारी के माध्यम से सामाजिक एवं पर्यावरणीय परिवर्तन का साधन बनता है।

5. नवाचार और अनुकूलन: स्वदेशी का अर्थ पुरातनपंथी तकनीकों में अटका रहना नहीं है। गांधी तकनीक के विरोधी नहीं थे, बल्कि ऐसी 'मध्यवर्ती तकनीक' या 'उपयुक्त तकनीक' के पक्षधर थे जो मानव श्रम की गरिमा को बनाए रखे, रोजगार को नष्ट न करे और स्थानीय जरूरतों के अनुकूल हो। आज 'ग्लोकल' (ग्लोबल+लोकल) दृष्टिकोण लोकप्रिय है, जहाँ वैश्विक तकनीक और पूंजी का उपयोग स्थानीय समस्याओं के समाधान के लिए किया जाता है।

चुनौतियां और आलोचनाएं:

स्वदेशी के विचार की आलोचना भी होती है। कहा जाता है कि यह अर्थव्यवस्था को अक्षम बनाता है, वैश्विक प्रतिस्पर्धा और नवाचार को रोकता है, और संरक्षणवाद की ओर ले जाता है जिससे उपभोक्ता को महंगा और घटिया सामान खरीदना पड़ता है। ये आशंकाएं वाजिब हैं अगर स्वदेशी को कठोर संरक्षणवाद और तकनीकी रूढ़िवादिता से जोड़कर देखा जाए। लेकिन जैसा कि सुगत दासगुप्ता ने समझाया है, "गांधीवादी स्वदेशी का लक्ष्य अलगाव नहीं, बल्कि एक ऐसी नींव रखना था जिस पर मजबूत, स्वतंत्र और नैतिक राष्ट्र एक समानता और सहयोग के आधार पर आपस में जुड़ सकें" ।[7] इसमें गुणवत्ता, दक्षता और नवाचार के लिए भी गुंजाइश है, बशर्ते वे मानवीय और पारिस्थितिक मूल्यों के अधीन हों।

निष्कर्ष

ग्लोबल बाजार और गांधी का स्वदेशी दर्शन एक-दूसरे के पूर्ण विरोधी नहीं हैं। वे एक सातत्य के दो सिरे हैं, जिसके बीच एक संतुलन आवश्यक है। भविष्य का मार्ग एक समावेशी 'ग्लोकलाइजेशन' का हो सकता है, जहां वैश्विक सहयोग और स्थानीय आत्मनिर्भरता साथ-साथ चलें। राष्ट्रीय स्तर पर, इसका अर्थ है रणनीतिक क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता हासिल करना, MSME (सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम) क्षेत्र को मजबूत करना, और स्थानीय उत्पादकों को गुणवत्ता और बाजार पहुंच में सहयोग देना। वैश्विक व्यापार समझौते ऐसे हों जो विकासशील देशों को उनकी स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को बचाने की पर्याप्त गुंजाइश दें व्यक्तिगत स्तर पर, इसका अर्थ है एक जागरूक उपभोक्ता बनना। हर खरीदारी के पीछे के सामाजिक और पर्यावरणीय प्रभाव को समझना, स्थानीय उत्पादों को प्राथमिकता देना, और

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

अति-उपभोग से बचना। गांधी की स्वदेशी की अवधारणा हमें यह याद दिलाती है कि अर्थव्यवस्था का अंतिम लक्ष्य केवल भौतिक संवर्धन नहीं, बल्कि मानव कल्याण, सामाजिक न्याय और पारिस्थितिक सद्भाव है। एक ऐसी वैश्विक व्यवस्था, जो इन मूल्यों को केंद्र में रखकर चले, वास्तव में टिकाऊ और मानवीय होगी। वैश्विक बाजार के इस विशाल सागर में, स्वदेशी की नाव हमें भटकाव से बचाकर, हमारी सामूहिक मानवीय पहचान के तट की ओर ले जाने का मार्गदर्शन कर सकती है। यह पीछे हटने का नहीं, बल्कि एक संतुलित, न्यायपूर्ण और टिकाऊ भविष्य की ओर बढ़ने का आह्वान है।

संदर्भ सूची (References)

1. कुमारप्पा, जे. सी. (1958). गांधीवादी इकोनॉमिक थॉट. सरस्वती प्रेस, बनारस, पृ 45
2. गांधी, मोहनदास करमचंद. (1909). हिंद स्वराज. नवजीवन प्रकाशन मंडल, अहमदाबाद।
3. गांधी, मोहनदास करमचंद. (1925, 30 अप्रैल). 'स्वदेशी'. यंग इंडिया।
4. पय्यप्पिलिल, डॉ. थॉमस. (2010). गांधियन इकोनॉमिक्स: ए ह्यूमन एप्रोच टू सस्टेनेबल डेवलपमेंट. गांधी शांति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली,पृ 89
5. वर्ल्ड ट्रेड ऑर्गनाइजेशन. (2021). वर्ल्ड ट्रेड रिपोर्ट 2021: इकोनॉमिक रेजिलिएंस एंड ट्रेड. डब्ल्यूटीओ पब्लिकेशन, जिनेवा।
6. चंद्र, रमेश. (2003). गांधी एंड ग्लोबलाइजेशन: इश्यूज एंड प्रॉस्पेक्ट्स. मित्तल पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पृ 102
7. दासगुप्ता, सुगत. (1996). गांधीजी के आर्थिक विचार: एक अध्ययन. राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ 156